Baba’s Praise

20/7/2015

- न दूरदेश की रहने वाली आत्मा देखने में आती है, न दूरदेश में रहने वाला परमात्मा देखने में आता है।
- परमपिता परमात्मा जो ज्ञान का सागर है, वह भी देखने में नहीं आता।
- वही हमारा टीचर भी है, गुरू भी है। यह निराकारी एक ही बाप-टीचर-गुरू है। बाप-टीचर-गुरू तीनों निराकारी हैं।
- सत्यम् शिवम् सुन्दरम् कहा जाता है ना। सत्य बोलने वाला एक बाप है। बाप जब आते हैं, बच्चों से मिलते हैं, तब उसको ही सतसंग कहा जाता है।